

## ८. अक्षरब्रह्मयोग

अर्जुन बोले— हे पुरुषोत्तम, ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत तथा अधिदैव किसे कहते हैं? अधियज्ञ कौन है तथा वह इस देह में कैसे रहता है? हे मधुसूदन, संयत चित्त वाले मनुष्य द्वारा अन्त समय में आप किस तरह जाने जाते हैं? (८.०१-०२)

श्रीभगवान बोले— परम अविनाशी आत्मा ही ब्रह्म है. ब्रह्म का स्वभाव अध्यात्म कहा जाता है. प्राणियों को उत्पन्न करने वाली ब्रह्म की क्रिया-शक्ति को कर्म कहते हैं. (८.०३)

हे श्रेष्ठ अर्जुन, नश्वर वस्तु को अधिभूत और अक्षरब्रह्म के विस्तार (नारायण आदि) को अधिदैव कहते हैं. इस शरीर में ईश्वररूप मैं, परब्रह्म परमात्मा, ही अधियज्ञ हूँ. (८.०४)

जो मनुष्य अन्तकाल में भी मेरा ही स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है, वह मुझे ही प्राप्त होता है. इसमें सन्देह नहीं है. (प्र.उ. ३.१० भी देखें) (८.०५)

हे अर्जुन, मनुष्य मरने के समय जिस किसी भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह सदा उस भाव के चिन्तन करने के कारण उसी भाव को प्राप्त होता है. (छा.उ. ३.१४.०१ भी देखें) (८.०६)

इसलिए हे अर्जुन, तुम सदा मेरा स्मरण करो और अपना कर्तव्य करो. इस तरह मुझ में अर्पण किए मन और बुद्धि से युक्त होकर निस्सन्देह तुम मुझको ही प्राप्त होगे. (१२.०८ भी देखें) (८.०७)

हे पार्थ, परमात्मा के ध्यान के अभ्यासरूपी योग से युक्त, एकाग्र चित्त से परमात्मा का निरन्तर चिन्तन करता हुआ साधक परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होता है. (८.०८)

जो भक्त सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियन्ता, सूक्ष्म से सूक्ष्म, सबका पालन पोषण करने वाला, अचिन्त्यरूप, सूर्य के समान प्रकाशित तथा अविद्या से परे परमात्मा का सदा स्मरण करता है, वह अचल मन से योगबल के द्वारा प्राण को भृकुटी के बीच में अच्छी तरह से स्थापित करके शरीर छोड़ने पर परमात्मा को प्राप्त करता है. (कठो.उ. २.२०, यजु.वे. ३१.१८ तथा गीता ४.२९, ५.२७, ६.१३ भी देखें) (८.०९-१०)

वेद के जानने वाले विद्वान् जिसे अविनाशी कहते हैं, आसक्तिरहित यत्नशील महात्मा जिसे प्राप्त करते हैं और जिस परमपद की प्राप्ति के लिए साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं, उसे मैं तुम्हें संक्षेप में कहूंगा. (कठो.उ. २.१५ भी देखें) (८.११)

जो साधक सब इन्द्रियों को वश में करके, मन को परमात्मा में और प्राण को मस्तक में स्थापित कर तथा योगधारणा में स्थित होकर अक्षरब्रह्म की ध्वनि-शक्ति, ओंकार, का उच्चारण करके मेरा स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह परमगति को प्राप्त होता है. (८.१२-१३)

हे अर्जुन, जो मुझ में ध्यान लगाकर नित्य मेरा स्मरण करता है, उस नित्ययुक्त योगी को मैं सहज ही प्राप्त होता हूँ. (८.१४)

महात्मा लोग परम सिद्धिरूपी मुझे प्राप्त करने के बाद फिर इस नश्वर दुःख भरे सन्सार में पुनर्जन्म नहीं लेते. (८.१५)

हे अर्जुन, ब्रह्मलोक और उसके नीचे के सभी लोकों के प्राणियों का पुनर्जन्म होता है; परन्तु हे कुन्ती पुत्र, मेरा लोक अर्थात् परमधाम प्राप्त होने पर मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता. (९.२५ भी देखें) (८.१६)

जो लोग यह जानते हैं कि ब्रह्माजी के एक दिन की अवधि एक हजार युग (अर्थात् ४.३२ अरब वर्ष) है तथा उनकी एक रात की अवधि भी एक हजार युग है, वे दिन और रात को जानने वाले हैं. (८.१७)

ब्रह्माजी के दिन के आरम्भ में अव्यक्त अक्षर ब्रह्म (अर्थात् आदि प्रकृति) से सारा जगत् उत्पन्न होता है, तथा ब्रह्माजी की रात्रि के आने पर जगत् उस अव्यक्त में ही विलीन हो जाता है. (८.१८)

हे पार्थ, वही प्राणिसमुदाय अवश जैसा हुआ बार-बार ब्रह्माजी के दिन में उत्पन्न तथा ब्रह्माजी के रात्रि में विलीन होता रहता है. (८.१९)

परन्तु इस क्षर प्रकृति से परे एक दूसरी अविनाशी आदि प्रकृति है, जो सब भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होती. उसी को अव्यक्त अक्षरब्रह्म अर्थात् परमगति कहा गया है, वही मेरा परमधाम है, जिसे प्राप्तकर मनुष्य आवागमन के बन्धनों से मुक्त हो जाता है. (८.२०-२१)

हे पार्थ, सभी प्राणी जिस परमात्मा के अन्दर हैं तथा जिससे यह सारा संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष परमात्मा अनन्यभक्ति से ही प्राप्त होता है. (९.०४, ११.५५ भी देखें) (८.२२)

हे भरतकुल श्रेष्ठ, जिस मार्ग द्वारा शरीर त्यागकर गये हुए योगीजन वापस न लौटने वाली गति को और वापस लौटने वाली गति को प्राप्त होते हैं, उन दोनों मार्गों को मैं तुम्हें बताऊंगा. (८.२३)

जो ब्रह्मविद् साधकजन अग्नि, प्रकाश, दिन, शुक्लपक्ष और उत्तरायण के छः मास वाले (ज्ञान का प्रकाश) मार्ग द्वारा जाते हैं, वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं (तथा पुनः संसार में वापस नहीं आते हैं). (छा.उ. ४.१५.०५, ५.१०.०१, बृह.उ. ६.२.१५, प्र.उ.१.१० तथा ईशा.उ. १८ भी देखें) (८.२४)

धूम, रात्रि, कृष्णपक्ष और दक्षिणायन के छः मास वाले (अज्ञान) मार्ग से जाने वाला सकाम योगी स्वर्ग जाकर पुनः वापस आता है. (छा.उ. ५.१०.०३-०५, ब्र.सू. ३.०१.०८ तथा गीता ९.२१ भी देखें) (८.२५)

जगत् में ये दो — शुक्ल और कृष्ण (अर्थात् ज्ञान और अज्ञान) — सनातन मार्ग माने गये हैं. इनमें ज्ञान मार्ग के द्वारा जाने वालों को लौटना नहीं पड़ता और अज्ञान मार्ग वालों को लौटना पड़ता है. (८.२६)

हे पार्थ, इन दो मार्गों को तत्त्व से जानने वाला कोई भी योगी भ्रमित नहीं होता. इसलिए हे अर्जुन, तुम सदा योगयुक्त रहो. (८.२७)

योगी इस अध्याय को समझकर वेदों में, यज्ञों में, तपों में तथा दान में जो पुण्यफल कहे गये हैं, उन सबका उल्लंघन कर जाता है और परब्रह्म परमात्मा के परमधाम को प्राप्त करता है. (८.२८)

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो नमोः ॥  
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥